न्यारापन १४

१

प्रैक्टिकल में देखा ना एक सेकेण्ड के बुलावे पर एवररेडी रह दिखाया। यह सोचा क्या कि बच्चे क्या कहेंगे? बच्चों से बिगर मिले कैसे जावें – यह सोचा? एलान निकला और एवररेडी। चोले से इज़ी होने से चोला छोड़ना भी इज़ी होता है, इसलिए यह कोशिश हर वक्त करनी चाहिए। यही संगमयुग का गायन होगा कि कैसे रहते हुए भी न्यारे थे। तब ही एक सेकेण्ड में न्यारे हो गये। बहुत समय से न्यारे रहने वाले एक सेकेण्ड में न्यारे हो जायेंगे। बहुत समय से न्यारापन नहीं होगा तो यही शरीर का प्यार पश्चाताप में लायेगा इसलिए इनसे भी प्यारा नहीं बनना है। इससे जितना न्यारा होंगे उतना ही विश्व का प्यारा बनेंगे। इसलिए अब यही पुरुषार्थ करना है, ऐसे नहीं समझना है कि कोई व्याधि आदि का रूप देखने में आयेगा तब

जायेंगे उस समय अपने को ठीक कर देंगे। ऐसी कोई बात नहीं है । सर्विस के प्रति सम्बन्ध में रहते भी न्यारे रहने का जो मंत्र है – उसको नहीं भूलना। अभी वह संबंध जो रखना था सो रख लिया, अभी इस रीति संबंध रखने की भी आवश्यकता नहीं। सर्विस कारण अपने को हल्का करने की भी जरूरत नहीं। वह समय बीत चुका। अभी लौकिक के बीच अलौकिक नज़र आओ। अनेक व्यक्तियों के बीच अव्यक्त मूर्त लगे। वह व्यक्त देखने में आयें, आप - अव्यक्त देखने में आओ यह है परिवर्तन। शुरू में कोई के वायब्रेशन अथवा संग में अपने में परिवर्तन लाते थे, इसलिए कहते थे ब्रह्माकुमारी में हठ बहुत है लेकिन वह हठ अच्छा था ना। यह है ईश्वरीय हठ, इसलिए अब वायब्रेशन के बीच रहते अपने को न्यारा और प्यारा बनाना है। इतनी सर्विस नहीं करेंगे ? सिर्फ वाणी से कुर्बान नहीं होते। आप लोगों ने कैसे कुर्बानी की ? आन्तरिक आत्म-स्नेह से। प्रजा तो बहुत बनाई लेकिन अब कुर्बान करना है।

प्रवृर्ति में रहते इस देह और देह की दुनिया के सम्बन्धों से पर रहना। पुरानी वृति से पर रहना अर्थात परे रहना, न्यारा रहना। इसको कहा जाता है पर-वृति। प्रवृत्ति नहीं लेकिन पर-वृत्ती है। देखते देह को हैं लेकिन वृत्ति में आत्मा रूप है। सम्पर्क में लौकिक सम्बन्ध में आते हुए भी भाई-भाई के सम्बन्ध में रहना। इस पुराने शरीर की ऑखों से पुरानी दुनिया की वस्तुओं को देखते हुए न देखना। ऐसे प्रवृत्ति में रहने वाले अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र जीवन में चलने वाले – इसको कहा जाता है, परमात्म ज्ञान का प्रूफ। जो महान आत्मायें भी असम्भव समझती हैं लेकिन परमात्म ज्ञानी अति सहज बात अनुभव करते हैं।

३

बन्धन सदा कड़वा लगता है, सम्बन्ध मीठा लगता है। यह कर्मभोग – कर्म का कड़ा बन्धन साइलेन्स की शक्ति से पानी की लकीर मिसल अनुभव होगा। भोगने वाला नहीं, भोगना भोग रही हूँ – यह नहीं लेकिन साक्षी दृष्टा हो इस हिसाब किताब का

दृश्य भी देखते रहेंगे। इसलिए तन के साथ-साथ मन की कमजोरी, डबल बीमारी होने के कारण जो कड़े भोग के रूप में दिखाई देता है वह अति न्यारा और बाप का प्यारा होने के कारण डबल शक्ति अनुभव होने से कर्मभोग के हिसाब की शक्ति के ऊपर वह डबल शक्ति विजय प्राप्ति कर लेगी। बीमारी चाहे कितनी भी बड़ी हो लेकिन दुख वा दर्द का अनुभव नहीं करेंगे। जिसको दूसरी भाषा में आप कहते होकि सूली से काँटै के समान अनुभव होगा।

४

सच्ची सीता वह, जिसकी नस-नस में राम के स्मृति का आवाज़ हो– अपने को सच्ची सीता समझते हो? सच्ची सीता अर्थात् हर कदम श्रीमत की लकीर के अन्दर। तो सदा लकीर के अन्दर रहते हो ना? राम एक है, बाकी सब सीतायें हों। सीता को लकीर के अन्दर ही बैठना है। सदा बाप की याद, सदा बाप की श्रीमत– ऐसी लकीर के अन्दर रहने वाली सच्ची

सीता। एक कदम भी बिना श्रीमत के नहीं। जैसे ट्रेन को पटरी पर खड़ा कर देते हैं तो आटोमेटिकली रास्ते पर चलती रहती है, ऐसे ही रोज़ अमृततवेले याद की लकीर पर खड़े हो जाओ। अमृतवेला है फाउन्डेशन। अमृतवेला ठीक है तो सारा दिन ठीक हो जायेगा। प्रवृत्ति में रहने वालों का विशेष अमृतवेले का फाउन्डेशन पक्का होना चाहिए तो सारा दिन स्वत: सहयोग मिलता रहेगा। लौकिक प्रवृत्ति में रहते भी सदा एक बाप की सच्ची सीता बनकर रहो। सीता को सदा राम ही याद रहे। नस-नस में राम के स्मृति की आवाज़ हो- ऐसी सच्ची सीताएं हो ना! इसी को कहा जाता है न्यारा और प्यारा। जितना न्यारे उतना बाप के प्यारे।

५

सदा अपने को रूहानी रूहे गुलाब समझते हो? रूहानी रूहे गुलाब अर्थात् सदा रूहानियत की खुशबू से सम्पन्न आत्मा। जो रूहे गुलाब होता है उसका काम है सदा खुशबू देना, खुशबू

फैलाना। गुलाब का पुष्प जितना खुशबूदार होता है उतने कांटे भी होते हैं, लेकिन कांटों के प्रभाव में नहीं आता। कभी कांटों के कारण गुलाब का पुष्प बिगड़ नहीं जाता है, सदा कायम रहता है। कांटे हैं लेकिन कांटों से न्यारा और सभी को प्यारा लगता है। स्वयं न्यारा है तब प्यारा लगता है। अगर खुद ही कांटों के प्रभाव में आ जाए तो उसे कोई हाथ भी नहीं लगायेगा। तो रूहानी गुलाब की विशेषता है, किसी भी प्रकार के कांटे हों–छोटे हों या बड़े हों, हल्के हों या तेज हों–लेकिन हो सदा न्यारा और बाप का प्यारा। प्यारा बनने के लिए क्या करना पड़े ? न्यारापन प्यारा बनाता है। अगर किसी भी प्रभाव में आ गये तो न बाप के प्यारे और न ब्राह्मण परिवार के। अगर सच्चा प्यार प्राप्त करना है तो उसके लिए न्यारा बनो–सभी हद की बातों से, अपनी देह से भी न्यारा। जो अपनी देह से न्यारा बन सकता है वही सबसे न्यारा बन सकता है। कई सोचते हैं–हमको इतना प्यार नहीं मिलता, जितना मिलना चाहिए। क्यों नहीं मिलता ? क्योंकि न्यारे नहीं हैं। नहीं तो परमात्मप् यार अखुट

है, अटल है, इतना है जो सर्व को प्राप्त हो सकता है। लेकिन परमात्म-प्यार प्राप्त करने की विधि है–न्यारा बनना। विधि नहीं आती तो सिद्धि भी नहीं मिलती। कई बच्चे कहते हैं–बाबा से मिलन मनाना चाहते हैं लेकिन अनुभव नहीं होता है, रूहरिहान करते हैं लेकिन जवाब नहीं मिलता है। कारण क्या है? पहले न्यारे बने जो प्यार मिले? प्यार प्राप्त करने का फाउन्डेशन अगर पक्का है, तो प्राप्ति की मंजिल प्राप्त न हो–यह हो ही नहीं सकता। क्योंकि बाप की गारन्टी है। गारन्टी है–एक बात आप करो, बाकी सब मैं करूँ। एक बात–मुझे दिल से याद करो, मतलब से नहीं। कोई विघ्न आयेगा तो ४ घण्टा योग लगायेंगे और विघ्न खत्म हुआ तो याद भी खत्म हो गई। तो यह मतलब की याद हुई ना। इच्छा पूर्ण करने के लिए याद नहीं, अच्छा बनकर याद करना है। यह काम हो जाये, इसके लिए याद करूँ–ऐसे नहीं। पात्र बन परमात्म-प्यार का अनुभव कर सकते हो। रूहानी गुलाब अर्थात् परमात्म-प्यार की पात्र आत्माएं। परमात्म-प्यार के आगे आत्माओं का प्यार क्या है?

कुछ भी नहीं। जब परमात्म- प्यार के अनुभवी बनते हो तो दिल से क्या निकलता है? कौनसा गीत गाते हो? पा लिया, और कुछ नहीं रहा। ऐसे प्राप्ति के अधिकारी आत्मा बनो। पात्र की निशानी है–प्राप्ति होना। अगर प्राप्ति नहीं होती, कम होती है–तो समझो पात्र कम हैं। क्योंकि देने वाला तो दाता है और अखुट खजाना है। तो क्यों नहीं मिलेगा? पात्र योग्य है तो प्राप्ति भी सब हैं। सदा बाबा मेरा है तो प्राप्ति भी सदा होगी ना। कभी भी, किसी भी हद के प्रभाव से न्यारा रहना ही है, कभी प्रभाव में नहीं आना। फिर बार-बार पात्र बनने का अभ्यास माना मेहनत करनी पड़ती है। इसलिये हद के प्रभाव में न आकर सदा बेहद की प्राप्तियों में मगन रहो। सदा चेक करो कि–रूहानी गुलाब सदा रूहानियत की खुशबू में रहता हूँ, न्यारा रहता हूँ, प्यार का पात्र बनता हूँ? क्योंकि आत्माओं द्वारा प्राप्ति तो ६३ जन्म कर ली, उससे रिजल्ट क्या निकली? गंवा लिया ना। अभी पाने का समय है । हद की प्राप्तियां अर्थात् गंवाना, बेहद की प्राप्ति अर्थात् जमा होना।